रहीम ग्रंथावली
(दोहावली)

रहीम

कविता

रहीम ग्रंथावली

दोहावली

रहीम

दोहावली

भाग 1

तैं रहीम मन आपुनो, कीन्हों चारु चकोर।
निसि बासर लागो रहै, कृष्णचंद्र की ओर ।।1।।

अच्युत-चरण-तरंगिणी, शिव-सिर-मालति-माल।
हरि न बनायो सुरसरी, कीजो इंदव-भाल ।।2।।

अधम वचन काको फल्यो, बैठि ताड़ की छाँह।
रहिमन काम न आय है, ये नीरस जग माँह ।।3।।

अन्तर दाव लगी रहै, धुआँ न प्रगटै सोइ।
कै जिय आपन जानहीं, कै जिहि बीती होइ ।।4।।

अनकीन्हीं बातैं करै, सोवत जागे जोय।
ताहि सिखाय जगायबो, रहिमन उचित न होय ।।5।।

अनुचित उचित रहीम लघु, करहिं बड़ेन के जोर।
ज्यों ससि के संजोग तें, पचवत आगि चकोर ।।6।।

अनुचित वचन न मानिए जदपि गुराइसु गाढ़ि।
है रहीम रघुनाथ तें, सुजस भरत को बाढ़ि ।।7।।

अब रहीम चुप करि रहउ, समुझि दिनन कर फेर।
जब दिन नीके आइ हैं बनत न लगि है देर ।।8।।

अब रहीम मुश्किल पड़ी, गाढ़े दोऊ काम।
साँचे से तो जग नहीं, झूठे मिलैं न राम ।।9।।

अमर बेलि बिनु मूल की, प्रतिपालत है ताहि ।
रहिमन ऐसे प्रभुहिं तजि, खोजत फिरिए काहि ।।10।।

अमृत ऐसे वचन में, रहिमन रिस की गाँस ।
जैसे मिसिरिहु में मिली, निरस बाँस की फाँस ।।11।।

अरज गरज मानैं नहीं, रहिमन ए जन चारि ।
रिनिया, राजा, माँगता, काम आतुरी नारि ।।12।।

असमय परे रहीम कहि, माँगि जात तजि लाज ।
ज्यों लछमन माँगन गये, पारासर के नाज ।।13।।

आदर घटे नरेस ढिंग, बसे रहे कछु नाहिं ।
जो रहीम कोटिन मिले, धिग जीवन जग माहिं ।।14।।

आप न काहू काम के, डार पात फल फूल ।
औरन को रोकत फिरैं, रहिमन पेड़ बबूल ।।15।।

आवत काज रहीम कहि, गाढ़े बंधु सनेह ।
जीरन होत न पेड़ ज्यौं, थामे बरै बरेह ।।16।।

उरग, तुरंग, नारी, नृपति, नीच जाति, हथियार ।
रहिमन इन्हें सँभारिए, पलटत लगै न बार ।।17।।

ऊगत जाही किरन सों अथवत ताही कॉंति ।
त्यौं रहीम सुख दुख सवै, बढ़त एक ही भाँति ।।18।।

एक उदर दो चोंच है, पंछी एक कुरंड ।
कहि रहीम कैसे जिए, जुदे जुदे दो पिंड ।।19।।

एकै साधे सब सधै, सब साधे सब जाय ।
रहिमन मूलहिं सींचिबो, फूलै फलै अघाय ।।20।।

ए रहीम दर दर फिरहिं, माँगि मधुकरी खाहिं ।
यारो यारी छोड़िये वे रहीम अब नाहिं ।।21।।

ओछो काम बड़े करैं तौ न बड़ाई होय ।
ज्यों रहीम हनुमंत को, गिरधर कहै न कोय ।।22।।

अंजन दियो तो किरकिरी, सुरमा दियो न जाय ।
जिन आँखिन सों हरि लख्यो, रहिमन बलि बलि जाय ।।23।।

अंड न बौड़ रहीम कहि, देखि सचिक्कन पान ।
हस्ती-ढक्का, कुल्हड़िन, सहैं ते तरुवर आन ।।24।।

कदली, सीप, भुजंग-मुख, स्वाति एक गुन तीन ।
जैसी संगति बैठिए, तैसोई फल दीन ।।25।।

कमला थिर न रहीम कहि, यह जानत सब कोय ।
पुरुष पुरातन की बधू, क्यों न चंचला होय ।।26।।

कमला थिर न रहीम कहि, लखत अधम जे कोय ।
प्रभु की सो अपनी कहै, क्यों न फजीहत होय ।।27।।

करत निपुनई गुन बिना, रहिमन निपुन हजूर ।
मानहु टेरत बिटप चढ़ि मोहि समान को कूर ।।28।।

करम हीन रहिमन लखो, धँसो बड़े घर चोर ।
चिंतत ही बड़ लाभ के, जागत ह्वै गौ भोर ।।29।।

कहि रहीम इक दीप तें, प्रगट सबै दुति होय ।
तन सनेह कैसे दुरै, दृग दीपक जरु दोय ।।30।।

कहि रहीम धन बढ़ि घटे, जात धनिन की बात ।
घटै बढ़ै उनको कहा, घास बेंचि जे खात ।।31।।

कहि रहीम य जगत तैं, प्रीति गई दै टेर ।
रहि रहीम नर नीच में, स्वारथ स्वारथ हेर ।।32।।

कहि रहीम संपति सगे, बनत बहुत बहु रीत ।
बिपति कसौटी जे कसे, ते ही साँचे मीत ।।33।।

कहु रहीम केतिक रही, केतिक गई बिहाय ।
माया ममता मोह परि, अंत चले पछिताय।।34।।

कहु रहीम कैसे निभै, बेर केर को संग ।
वे डोलत रस आपने, उनके फाटत अंग ।।35।।

कहु रहीम कैसे बनै, अनहोनी ह्वै जाय ।
मिला रहै औ ना मिलै, तासों कहा बसाय ।।36।।

कागद को सो पूतरा, सहजहि मैं घुलि जाय ।
रहिमन यह अचरज लखो, सोऊ खैंचत बाय ।।37।।

काज परै कछु और है, काज सरै कछु और ।
रहिमन भँवरी के भए नदी सिरावत मौर ।।38।।

काम न काहू आवई, मोल रहीम न लेई।
बाजू टूटे बाज को, साहब चारा देई ।।39।।

कहा करौं बैकुंठ लै, कल्प बृच्छ की छाँह।
रहिमन दाख सुहावनो, जो गल पीतम बाँह ।।40।।

काह कामरी पामरी, जाड़ गए से काज।
रहिमन भूख बुताइए, कैस्यो मिलै अनाज ।।41।।

कुटिलन संग रहीम कहि, साधू बचते नाहिं।
ज्यों नैना सैना करें, उरज उमेठे जाहिं ।।42।।

कैसे निबहैं निबल जन, करि सबलन सों गैर।
रहिमन बसि सागर बिषे, करत मगर सों वैर ।।43।।

कोउ रहीम जनि काहु के, द्वार गये पछिताय।
संपति के सब जात हैं, विपति सबै लै जाय ।।44।।

कौन बड़ाई जलधि मिलि, गंग नाम भो धीम।
केहि की प्रभुता नहिं घटी, पर घर गये रहीम ।।45।।

खरच बढ़्यो, उद्यम घट्यो, नृपति निठुर मन कीन।
कहु रहीम कैसे जिए, थोरे जल की मीन ।।46।।

खीरा सिर तें काटिए, मलियत नमक बनाय।
रहिमन करुए मुखन को, चहिअत इहै सजाय ।।47।।

खैंचि चढ़नि, ढीली ढरनि, कहहु कौन यह प्रीति।
आज काल मोहन गही, बंस दिया की रीति ।।48।।